राजस्थान में गरीब के घर के बाहर लिखवाया, मैं गरीब हूं

कोई शौक से गरीब नहीं होता और न ही ढिंढारो पीट कर ऐलान करना चाहता है कि वो गरीब है। राजस्थान की वसुंधरा राजे सरकार ने प्रदेश के गरीब तबके के साथ कुछ ऐसा किया है जिससे लोग बहुत नाराज हैं।

राज्य के दौसा जिले में अधिकारियों ने बीपीएल कैटेगरी (गरीबी रेखा से नीचे) वाले परिवारों के घर के बाहर लिखवा दिया, मैं गरीब हूं और मुझे राष्ट्रीय खाद्यान्न सुरक्षा अधिनियम के तहत राशन मिलता है।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक तकरीबन 50 हजार से ज्यादा घरों के बाहर पीले रंग में पेंट कर बड़े-बड़े अक्षरों में ये बात लिख दी गई। जैसे ही ये तस्वीरें सोशल मीडिया में आईं, लोगों ने सरकार के इस कदम की आलोचना करनी शुरू कर दी।

इस बारे में फेसबुक और ट्विटर पर भी लोगों की तीखी प्रतिक्रियाएं देखी जा सकती हैं। स्वराज पार्टी के अध्यक्ष योगेंद्र यादव ने ट्वीट किया, अब ऐसे में क्या कहा जाए? गरीबी का ऐसा भद्दा मजाक या यूं कहा जाए अपमान क्या किसी भी सरकार को शोभा देता है?

काजल कुमार ने तंज किया, किसी के घर के बाहर मैं गरीब हूं लिखना गलत है। यह तो उसके माथे पर लिखना चाहिए। अनीता मिश्रा ने फेसबुक पर लिखा, जैसे सरकार गरीब लोगों के घर के बाहर लिखवा रही मैं गरीब हूँ, क्यों न जनता को नेताओं के घर के बाहर लिख देना चाहिए कि मेरा नेता चोर है। बेशर्म नेता।

दिलीप मंडल ने लिखा, किसी दिन वर्ल्ड बैंक, आईएमएफ, अमरीका, जर्मनी और ब्रिटेन वाले भारत के प्रधानमंत्री कार्यालय के दरवाजे पर लिखवा देंगे- भारत गरीब देश है, हमसे दान लेता है। गरीबों का मजाक उड़ाना बंद करो। दरवाजे पर गरीब लिखना एक गंदी हरकत है। अनाज लेना उनका कानूनी अधिकार है। संसद में एक्ट पास हुआ है।

राहुल राज नाम के ट्विटर यूजर ने कटाक्ष किया, आधार से डेटा का दुरुपयोग से डरना कैसा? अगर आप गरीब हैं और राजस्थान में हैं तो राज्य सरकार ये बात आपके घर की दीवार पर लिखवा देगी।

उमाशंकर सिंह ने लिखा, हमारे-आपके घर के बाहर एक सुंदर चमचमाता नेम प्लेट होता है। नेम प्लेट पर नाम से पहले डॉ, सर जैसी कोई उपाधि मिली हो तो वह चिपकी रहती है। कुछ नहीं तो श्री या मिस्टर तो रहता ही है। नेमप्लेट हमारा पता कम, ओहदा-औकात ज्यादा बताते हैं। इधर राजस्थान सरकार अपने यहां के गरीबों के घर पर नेमप्लेट नहीं, एक साइन बोर्ड लगवा रही है। उसमें भी वह उन लोगों का नाम कम, औकात ज्यादा बता रही है।

राजस्थान सरकार की दलील है कि ऐसा सिर्फ गरीब परिवारों की पहचान करने के लिए किया गया है जिन्हें सस्ता अनाज मुहैया कराया जाता है। इससे पहले राहुल गांधी ने एक बयान में कहा था कि गरीबी एक मानसिक अवस्था है। उनके इस बयान का भी काफी विरोध हुआ था। (बीबीसी)

अब किसे चुनेंगे सेक्युलर बिहारी बनाम कम्यूनल बाहरी?

विपक्षी दलों ने एनडीए के उम्मीदवार रामनाथ कोविंद के मुकाबले पूर्व लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार को मैदान में उतारकर राष्ट्रपति चुनाव को रोचक बना दिया है।

दलित नेता मायावती ने मीरा कुमार के नाम पर रजामंदी जताई है। पार्टी की ओर से सतीश मिश्रा ने बयान जारी कर कहा है कि विपक्षी दलों की बैठक के बाद मीरा कुमार का नाम हमारी पार्टी सुप्रीमों को पसंद है।

लालू ने भी इसके बाद एक बयान जारी किया। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार से उन्होंने मीरा कुमार को समर्थन देने की अपील की है। इस बारे में नीतीश पुनर्विचार करेंगे।

ट्विटर पर विपक्षी दलों के नेता मीरा कुमार को उनके राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के तौर पर चुने जाने पर बधाई दे रहे हैं।

इसे लेकर ट्विटर और फेसबुक यूजर्स में भी जमकर चर्चा हो रही है।

शिशिर कुमार ने फेसबुक पर लिखा है कि सबसे बड़ा सवाल अब नीतीश कुमार की पसंद को लेकर होगा। वो अब किसे समर्थन देंगे? एक सेक्युलर बिहारी को या कम्यूनल बाहरी को?

शिशिर को जवाब देते हुए सुनील कुमार ने लिखा है कि जो आदमी अपने बयान से पलट जाए, उसे क्या कहा जाता है, आप जानते ही हैं।

भरत शुक्ला ने कमेंट किया है कि देश में राष्ट्रपति चुना जा रहा है या फिर मजाक हो रहा है। किसी का भी उम्मीदवारों की योग्यता पर ध्यान नहीं है। सभी की दिलचस्पी उनकी जाति में है। काश हमें कलाम जैसा ही कोई राष्ट्रपति मिल पाता।

शैलेश जैन ने फेसबुक पर लिखा है, कुछ वक्त पहले अपनी उपेक्षा से नाराज होकर मीराकुमार ने भाजपा में जाने का मन बना लिया था। अब कांग्रेस को इन्हें राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित करना पड़ रहा है। वक्त वक्त की बात है।

चतुर्भुज नीलकंठ चतुर्वेदी ने मीरा कुमार की तारीफ में लिखा है कि मीरा कुमार एक मृदुभाषी, पूर्व लोकसभा स्पीकर और भूतपूर्व राजनयिक हैं। उनके सामने रामनाथ कोविंद की पात्रता कमजोर दिखती है।

अमर अनस ने लिखा है कि मीरा कुमार का विरोध करने वाले को अब पक्का एंटी-दलित माना जाएगा। (बीबीसी)

मयखाने में रात भर, प्यासा रोया रिन्द।
अडवाणी का जाम था, गटक गए कोविंद।।
-मधुप मोहता

मोबाइल से जासूसी की फेसबुक की तैयारी

अभय शर्मा

माइक्रोसॉफ्ट ने फिंगरप्रिंट स्कैनर वाला मॉडर्न की-बोर्ड लॉन्च किया 7 अब आतंकी फेसबुक और यूट्यूब का इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे

फेसबुक अब अपने यूजर्स पर उनके मोबाइल के कैमरे और कंप्यूटर के वेबकैम के जरिए नजर रखने की तैयारी कर रही है। खबरों के मुताबिक कंपनी ने एक ऐसे पेटेंट के लिए आवेदन किया है जिससे वह अपने यूजर की डिवाइस के कैमरे के जरिए उसके 'फेस एक्सप्रेशन' यानी चेहरे के हावभाव के बारे में पता लगा सकेगी। बताया जाता है कि इसके पीछे फेसबुक का उदेश्य यह पता करना है कि किसी पोस्ट, मैसेज, फोटो, वीडियो या विज्ञापन को देखकर यूजर किस तरह की प्रतिक्रिया देता है।

हाल ही में सीबी इनसाइट्स नामक अमेरिकी वेबसाइट ने फेसबुक के इस पेटेंट आवेदन के बारे में खुलासा किया है। वेबसाइट ने इसकी जानकारी देते हुए बताया है कि इस तकनीक के जरिए यूजर के द्वारा किसी वेबसाइट को पढ़ते समय उसके फोटो लिए जा सकते हैं या वीडियो भी बनाए जा सकते हैं। इससे यह पता लगाया जा सकता है कि वेबसाइट के किस कंटेंट को देखते या पढ़ते समय यूजर की कैसी प्रतिक्रिया थी।

सीबी इनसाइट्स का यह भी कहना है कि इस तकनीक के इस्तेमाल से फेसबुक का काम काफी आसान हो जाएगा। उदहारण के तौर पर यदि किसी फेसबुक यूजर को एक विशेष तरह की पोस्ट या विज्ञापन देखने में ख़ुशी होती है तो उसके चेहरे के हाव-भाव देखने के बाद फेसबुक उसे उसी तरह की फोटो या पोस्ट भेजेगा। इस तकनीक में सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि इससे कोई वेबसाइट अपने यूजर की अनुमति के बिना भी उसके फोटो ले सकती है। दूसरे शब्दों में कहें तो किसी यूजर का कैमरा ऑन नहीं है तो भी इस तकनीक के जरिए उसकी फोटो या वीडियो क्लिप बनाई जा सकती हैं।

उधर, फेसबुक की ओर से इस खुलासे पर सफाई दी गई है। फेसबुक के प्रवक्ता ने कहा है कि कंपनी की ओर से इस पेटेंट के लिए एप्लीकेशन दी गई है लेकिन, उसकी इसे लागू करने की कोई योजना नहीं है।

माइक्रोसॉफ्ट ने फिंगरप्रिंट स्कैनर वाला मॉडर्न की-बोर्ड लॉन्च किया

माइक्रोसॉफ्ट ने एक विशेष अत्याधुनिक की-बोर्ड लांच किया है। कंपनी ने इसका नाम 'माइक्रोसॉफ्ट मॉडर्न की-बोर्ड' रखा है। माइक्रोसॉफ्ट की ओर से इसकी विशेषताओं के बारे में बताते हुए कहा गया है कि इस की-बोर्ड में दिया गया फिंगरप्रिंट स्कैनर इसकी सबसे बड़ी खासियत है। कंपनी के अनुसार इस फिंगरप्रिंट स्कैनर के जरिए विंडोज 10 यूजर्स अपने कंप्यूटर को फिंगरप्रिंट ऑथेंटिकेशन इनेबल कर पाएंगे यानी इसके इस्तेमाल से वे अपने कंप्यूटर पर फिंगरप्रिंट तकनीक से लॉग इन कर सकेंगे। माइक्रोसॉफ्ट का यह भी कहना है कि इस की-बोर्ड में लगे फिंगरप्रिंट स्कैनर का उपयोग किसी भी वेबसाइट में साइन-इन करने के लिए भी किया जा सकता है।

फिंगरप्रिंट स्कैनर वाला यह मॉडर्न की-बोर्ड विंडोज 10, मैक ओएस और एंड्रॉयड के लेटेस्ट वर्जन पर काम करेगा। कंपनी ने ग्राहकों की सहूलियत के लिए इसे वायर या बिना वायर के चलाने का भी ऑप्शन दिया है। वायरलेस मॉडर्न की-बोर्ड के लिए यूजर का कंप्यूटर या डिवाइस ब्लूटूथ 4.0 या इससे अधिक को सपोर्ट करता होना चाहिए। माइक्रोसॉफ्ट ने अमेरिकी बाजार में इसकी कीमत डॉलर 129.99 (लगभग 8,500 रुपए) रखी है।

अब आतंकी फेसबुक और यूट्यूब का इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे

आतंकियों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक और यूटयूब का बढ़ चढ़कर इस्तेमाल किए जाने की खबरें आने के बाद फेसबुक और गूगल ने बड़ा फैसला लिया है। फेसबुक के अधिकारियों ने एक ब्लॉग पोस्ट के माध्यम से बताया कि कंपनी ने अपने नियमों में बड़ा बदलाव किया है। इसके तहत अब कंपनी ने आतंकी सामग्री का पता लगाने और उसे तुरंत हटाने के लिए आर्टिफिशल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। इन लोगों के मुताबिक इससे यूजर्स के देखने और रिपोर्ट करने से पहले ही ऐसी सामग्री को हटाया जा सकेगा। इससे पहले तक फेसबुक यूजर्स द्वारा किसी कॉन्टेंट को संदिग्ध बताए जाने के बाद ही उसकी समीक्षा करता था और हटाता था।

उधर, फेसबुक के इस फैसले के दो दिन बाद ही गूगल ने भी इसी तरह का फैसला लिया है। बीते रविवार कंपनी ने एक ब्लॉग पोस्ट में बताया है कि उसने अपने वीडियो शेयरिंग प्लेटफॉर्म यूट्यूब पर आतंकवादी या हिंसक या कट्टरपंथी सामग्री को पहचानने और हटाने के लिए कुछ नए और कड़े नियम बनाए हैं। इस पोस्ट में गूगल के एक्जीक्यूटिव केंट वाकर ने कहा है कि जो वीडियो सीधे-सीधे आतंकवाद को बढ़ावा देते हुए दिखेंगे उन्हें पहचान कर तुरंत हटा दिया जायेगा। इसके अलावा वे वीडियो जो पूरी तरह से उसके नए नियमों का उल्लंघन नहीं करते होंगे या जिनमें बहुत कम भड़काऊ धार्मिक कॉन्टेंट मौजूद होगा, उन्हें चेतावनी के साथ दिखाया जाएगा। साथ ही ऐसे वीडियो को न तो प्रोमोट किया जाएगा और न ही उन पर विज्ञापन दिखाए जाएंगे। इसके अलावा भी एक ऐसी व्यवस्था की जा रही है जिससे यूजर इन्हें आसानी से ढूंढ न पाएं।

पिछले दिनों आतंकियों द्वारा फेसबुक और गूगल का इस्तेमाल किए जाने के कई मामले सामने आए थे जिसके बाद इन कंपनियों की जमकर आलोचना हुई थी। हाल ही में ब्रिटेन में लंदन ब्रिज पर हुए आतंकी हमले में शामिल एक आतंकी के करीबियों ने भी बताया था कि वह यूट्यूब पर इस्लामी उपदेशकों के वीडियो देखकर कट्टरपंथी बन गया था। इसके बाद गूगल पर ये आरोप भी लगे थे कि वह ऐसे वीडियो को हटाने के बजाय इन पर विज्ञापन दिखाकर पैसे कमा रहा है। (सत्याग्रह)

रीता बहुगुणा के पिता कोभी नहीं मालूम था

पेज 7 से आगे

जो आंतरिक इमरजेंसी की घोषणा के लिए बाध्य करे।

सरकारी दस्तावेजों से आयोग ने निम्नांकित तथ्यों को जुटाया,

1. आर्थिक मोर्चे पर किसी भी तरह का खतरा नहीं था।

2. कानून और व्यवस्था के बारे में हर पखवाड़े आने वाली रपटों से पता चलता है कि सारे देश में स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में थी।

3. इमरजेंसी की घोषणा से एकदम पहले की अवधि पर ध्यान दें तो राज्य सरकारों की ओर से गृहमंत्रालय को कोई भी ऐसी रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई थी जिसमें कानून और व्यवस्था के बिगड़ने का संकेत मिलता हो।

4. आंतरिक इमरजेंसी लगाने के सिलसिले में 25 जून 1975 से पूर्व गृहमंत्रालय ने किसी भी तरह की योजना नहीं तैयार की थी।

5. इंटेलिजेंस ब्यूरो ने 12 जून 1975 से लेकर 25 जून 1975 के बीच की अवधि की कोई भी ऐसी रिपोर्ट गृहमंत्रालय को नहीं दी थी जिससे यह आभास हो कि देश की आंतरिक स्थिति इमरजेंसी लगाने की मांग करती है।

6. गृहमंत्रालय ने प्रधानमंत्री के पास ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं दी जिसमें उसने देश की आंतरिक स्थिति पर चिंता प्रकट की हो।

7. गृह सचिव, कैबिनेट सचिव और प्रधानमंत्री के सचिव जैसे वरिष्ठ अधिकारियों को इमरजेंसी की घोषणा के मुद्दे पर विश्वास में नहीं लिया गया लेकिन प्रधानमंत्री के तत्कालीन अतिरिक्त निजी सचिव आर.के.धवन शुरू से ही इमरजेंसी की घोषणा की तैयारियों में लगे रहे।

8. गृहमंत्री ब्रह्मानंद रेड्डी की बजाय गृह राज्यमंत्री ओम मेहता को काफी पहले से इस मुद्दे पर विश्वास में लिया गया। केवल कुछ मुख्यमंत्रियों और दिल्ली के लेफ्टिनेंट गर्वनर को इमरजेंसी लगाने के बारे में विश्वास में लिया गया।

9. दिल्ली के लेफ्टिनेंट गर्वनर और हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्रियों को प्रधानमंत्री द्वारा आंतरिक आपातकाल के अंतर्गत संभावित कार्रवाई की अग्रिम जानकारी दी गयी लेकिन इस तरह की कोई अग्रिम जानकारी उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, जम्मू कश्मीर, त्रिपुरा, उड़ीसा, केरल, मेघालय और केन्द्र शासित प्रदेशों की सरकारों को नहीं दी गयी।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हेमवती नंदन बहुगुणा ने बताया कि आपातकाल की घोषणा के बारे में उनको 26 जून की सुबह उस समय जानकारी मिली जब वह केंद्रीय मंत्रियों उमाशंकर दीक्षित और केशव देव मालवीय के साथ नाश्ते की मेज पर थे और इस खबर से उन लोगों को भी उतनी ही हैरानी हुई। इमरजेंसी का आदेश गृहमंत्रालय से और मंत्रिमंडल सचिवालय के जरिए आना चाहिए जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति को भेजे गए अपने 'अत्यंत गोपनीय' पत्र में बताया था कि भारत सरकार (कार्य निष्पादन) अधिनियम 1961 के नियम 12 के अंतर्गत अपने अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने इस निर्णय की सूचना कैबिनेट को नहीं दी है और वह इसका उल्लेख सुबह होते ही सबसे पहले कैबिनेट में करेंगी।

शाह आयोग की सिफारिशें खुफिया विभाग का दुरुपयोग

आयोग ने सिफारिश की कि इस बात की पूरी सावधानी बरती जाय और हर तरह के उपाय किए जाएं ताकि खुफिया विभाग को सरकार अथवा सरकार में शामिल किसी व्यक्ति द्वारा अपने निजी हित के लिए राजनीतिक जासूसी के उपकरण के रूप में इस्तेमाल न किया जा सके। इस मुद्दे पर अगर जरूरी हो तो सार्वजनिक बहस चलायी जाए।

(समकालीन तीसरी दुनिया, जून 2011 से)

आपातकाल की यादें, हस्तक्षेप वेबसाईट से

सुडोकू- 4089 का हल (ch)

9	2	5	1	6	8	4	3	7
7	4	8	9	3	5	2	6	1
3	1	6	7	2	4	9	5	8
2	7	9	8	1	6	5	4	3
8	5	4	3	9	7	6	1	2
1	6	3	5	4	2	7	8	9
5	9	7	6	8	1	3	2	4
6	8	2	4	7	3	1	9	5
4	3	1	2	5	9	8	7	6

मिनी सुडोकू-2950 का हल

5	2	3	4	6	1
6	1	4	2	5	3
2	4	5	3	1	6
1	3	6	5	4	2
4	6	2	1	3	5
3	5	1	6	2	4

छत्तीसगढ़ शब्द पहेली क्रमांक-4089 का सही उत्तर

ब्रेस्ट कैंसर को हराने वाली रंगकर्मी विभा रानी सैलिब्रेटिंग कैंसर के माध्यम से दे रही कैंसर से लड़ने की प्रेरणा

कैंसर तो एक खतरनाक बीमारी है, फिर इसे कोई सैलिब्रेट कैसे कर सकता है? क्यों नहीं कर सकता है और इसका सबसे बड़ा उदाहरण है मुंबई की विभा रानी। विभा वो मजबूत नाम हैं, जिन्हें ब्रेस्ट कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी भी हरा नहीं पाई। विभा ने अपनी कमजोरी को ही अपनी ताकत बना लिया और अब वो अपनी उसी ताकत को दूसरों की जिंदगी में भरने का प्रयास कर रही हैं।

परिवार का साथ और स्वयं का आत्मविश्वास जिंदगी को जीने और बहादुरी से लड़ने में सबसे बड़ी भूमिका निभाता है, जिसका जीवंत उदाहरण हैं रंगकर्मी और लेखिका विभा रानी।

विभा हिंदी और मैथिली साहित्य की दुनिया का एक जाना माना नाम हैं। बीस से अधिक पुस्तकें लिख चुकी विभा थिएटर में भी अपनी एक खास पहचान रखती हैं। पंद्रह से अधिक नाटक, दो फिल्में, एक टीवी सीरियल और बीस से अधिक किताबें लिख चुकी विभा को जब पता चला कि उन्हें कैंसर है तो कुछ पल को उनकी दुनिया वहीं ठहर गई, लेकिन फिर उन्होंने उस ठहरी दुनिया में इंद्रधनुषी रंग भर एक नया आकाश बना लिया।

बाबू मोशाय जिंदगी बड़ी होनी चाहिए, लंबी नहीं आनंद फिल्म के इस डायलॉग पर हमने जाने कितनी बार तालियां बजाई हैं, कितनी बार खिलखिलाए हैं। कैंसर से डरकर नहीं, लड़कर जीना चाहिए, यही सिखाती है न ये फिल्म। जानी-मानी रंगकर्मी और मैथिली साहित्यकार विभा रानी ने कैंसर के इस आनंद को असल जिंदगी में जिया है। वो एक ब्रेस्ट कैंसर सर्वाइवर हैं। उन्होंने न केवल कैंसर से जंग जीती बल्कि उसके प्रति लोगो में जागरूकता फैलाने को अपना मिशन बना लिया। उन्होंने कैंसर पर कविताएं लिखी नाटक लिखे और उनका एकल मंचन भी किया। विभा रानी ने जेल में बंद कैदियों के साथ भी साहित्य और नाटक के जरिये बहुत काम किया है। कैंसर से अपने युद्ध के दौरान उन्होंने बहुत-सी कविताएं लिखीं, जो अब एक संग्रह के रूप में प्रकाशित हो चुकी हैं। पुस्तक का शीर्षक है समरथ कैन।

तमाम जांच पड़ताल के बाद जब उन्हें कैंसर होने की पुष्टि हुई, तो उनके सामने दो ही स्थितियां थी, या तो वे हालात का मुकाबला रो कर करें या हंस का करें। उन्होंने दूसरा विकल्प चुना। इसी कारण वे खुद भी हंस सकी और उनके आसपास के लोग भी मुस्कुरा सकें। उन्हें लगा कि कैंसर से वैसे ही माहौल गमगीन हो जाता है, तो क्यों न इससे जूझने जैसे शब्द के बजाय इसे मनाने और सेलिब्रेट करने जैसे शब्द का इस्तेमाल किया जाये। उन्होंने सेलेब्रटिंग कैंसर नाम से एक लेख भी लिखा। आज सेलेब्रटिंग कैंसर एक मिशन बन चुका है।

सेलिब्रेटिंग कैंसर के जरिये विभा रानी लोगो में कैंसर के प्रति जागरूकता लाने और एक सकारात्मक नजरिया जगाने की कोशिश में लगी हैं। कहना गलत न होगा कि विभा ने अपने रोग को ही राग बना लिया है। यूं तो उनकी सभी कविताएं

महत्वपूर्ण हैं लेकिन मन को सबसे ज्यादा छूती हैं उनकी वो कविताएं जो उन्होंने कैंसर से अपने संघर्ष के दौरान लिखी। इन कविताओं में वो बेहद जिंदादिली से कैंसर जैसे भयंकर और डरावने रोग को कभी किस्सू डिअर तो कभी केंसू डार्लिंग कह कर बुलाती हैं।

विभा ने कैंसर पर लिखी अपनी सभी कविताएं उन लोगों को समर्पित की हैं, जिन्होंने कैंसर को कैंसर मानने से इंकार कर दिया है।

विभा हिंदी और मैथिली साहित्य की दुनिया का एक जाना माना नाम हैं। बीस से अधिक पुस्तकें लिख चुकी विभा रानी थिएटर की दुनिया की बेहद महत्वपूर्ण हस्ती हैं। वो पंद्रह से अधिक नाटक, दो फिल्में, एक टीवी सीरियल और बीस से अधिक किताबें लिख चुकी हैं। विभा को मैथिली फिल्म मिथला मखान को राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुका है। इसके गीत भी उन्होंने ही लिखे हैं। विलुप्तप्राय कैटेगरी में आ चुके शादी ब्याह में गाए जाने वाली गाली गीतों को भी संजोने में विभा काफी उम्दा काम कर रही हैं। वो कविता भी लिखती हैं, कहानी और नाटक भी। उन्होंने जेल में बंद कैदियों के साथ भी साहित्य और नाटक के जरिये बहुत काम किया है। विभा की जन्भूमि बिहार है। इसलिए बिहार की लोक संस्कृति उनके व्यक्तित्व में घुली मिली हुई है। फिलहाल वे मुम्बई में हैं। विभा इंडियन आयल कारपोरेशन में अधिकारी हैं। उनके पति अजय ब्रम्हात्मज वरिष्ठ फिल्म समीक्षक हैं।

विभा रानी का अपना एक ब्लॉग है छम्मकछल्लो कहिस। इस ब्लॉग के जरिये वो देश दुनिया विशेषकर महिलाओं से जुड़े मुद्दे उठाती रहती हैं।

विभा अब तक कथा सम्मान, मोहन राकेश सम्मान, घनश्याम दास सर्राफ साहित्य सम्मान, डॉ महेश्वरी सिंह महेश सर्वोत्तम साहित्य सम्मान और साहित्यसेवी सम्मान से सम्मानित हो चुकी हैं। उनके दो नाटकों आओ तनिक प्रेम करें और अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो को मोहन राकेश सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। वे भारत से बाहर फिनलैंड और संयुक्त अरब अमीरात में भी अपने नाटकों का प्रदर्शन कर चुकी हैं।

विभा अपने लेख सेलिब्रेटिंग कैंसर में लिखती हैं, कुछ दिन लगते हैं, अपने-आपसे लड़ने में, खुद को तैयार करने में। लेकिन, अपना मानसिक संबल और घरवालों का संग-साथ कैंसर क्या, किसी भी दुश्वारियों से निजात की संजीवनी है। यह आपको कई रास्ते देता है- आत्म मंथन, आत्म-चिंतन, आराम, खाने-पीने और सबकी सहानुभूति भी बटोरने का (हाहाहा)। यह ना सोचें कि आप डिसफिगर हो रही हैं। यह सोचें कि आपको जीवन जीने का एक और मौका मिला है, जो शत-प्रतिशत आपका है। इसे जिएं। भरपूर ऊर्जा और आत्म-विश्वास से और बता दीजिये कैंसर को कि आपमें उससे लड़ने का माद्दा है। सो, कम एंड लेट्स सेलिब्रेट कैंसर!

क्या फर्क पड़ता है कि
सीना सपाट है या उभरा
चेहरा सुंदर है या बिगड़ा
सर पर बाल हैं या है यह टकला
जीवन इससे बढ़कर है
यौवनमय, स्फूर्त और ताजा,
आइये, मनाएं इसे भरपूर,
जिएं इसे भरपूर !
(यूअर स्टोरी हिन्दी)

अंक जाल- 2999 का हल

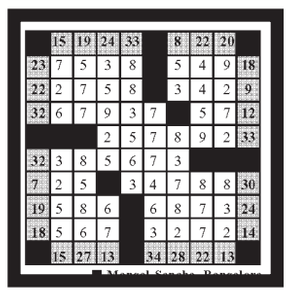

गणित का चौराहा - 3009

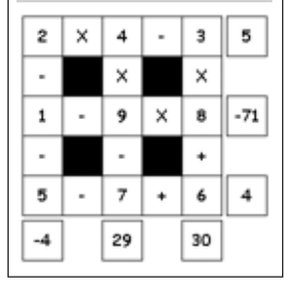

Name, Fame and Game-4009 Solution

अगर आप कुछ नाम ढूंढ न पाए हों तो यहां दिए गए उत्तरों की मदद लें। नामों को आड़ी और खड़ी कतारों के नंबर व उनकी दिशा के आधार पर ढूंढें

(Over,Down,Direction)
ALADDIN(2,13,E)
ARSLAAN(3,1,SE)
BAALVEER(14,8,NW)
CHHOTABHEEM(5,21,E)
CHIANDME(15,9,N)
GALLIGALLISIMSIM(13,1,S)
GOLUKEGOGGLES(13,18,W)
HATIM(18,14,W)
HOWZZATTT(9,15,W)
INDRADHANUSH(16,12,N)
JANBAAZSINDBAD(14,1,SW)
KARTIKA(18,16,S)
LITTLEKRISHNA(17,13,NW)
MIGHTYRAJU(17,2,S)
SANYA(5,7,NW)
SHAKALAKABOOMBOOM(1,5,SE)
SHAKTIMAAN(10,1,SW)
SHARARAT(1,8,NE)
SONPARI(7,17,SW)
TENALIRAMAN(2,11,NE)
THESTONEBOY(1,1,SE)